९. रज्जब चाचा

– व्यथित हृदय

गाँव के एक कोने में रज्जब चाचा का एक छोटा-सा मकान है । संध्या, सवेरे, दोपहर, जब जाओ, वे अपने बरामदे में बैठकर कपड़े सीते हुए मिलते हैं । यदि कोई उनसे कहता कि रज्जब चाचा आप थोड़ी देर के लिए विश्राम क्यों नहीं कर लेते तो वे कहते हैं कि जिंदगी विश्राम करने के लिए नहीं, काम करने के लिए मिली है ।

सात-आठ गाँवों के बीच में रज्जब चाचा ही एक ऐसे हैं जो सिलाई का काम करते हैं । विवाह-शादियों और तीज-त्योहारों पर तो उनके पास इतना काम आ जाता है कि उन्हें दम मारने की फुरसत नहीं रहती । वे रात भर अपने पूरे परिवार के साथ जुटे रहते हैं, फिर भी काम निबटा नहीं पाते ।

विवाह-शादियों के दिनों में लोग रज्जब चाचा को बड़े चाव से बुलाते हैं । यदि वे स्वयं जोड़ा-जामा पहनाने के लिए न जाएँ तो उनके प्रेमी बुरा मानते हैं और फिर उन्हें उसके लिए उलाहना देते हैं ।

जोड़ा-जामा पहनाने में रज्जब चाचा को घाटा नहीं होता क्योंकि लोग उन्हें नेग में ऐसी रकम दे देते हैं, जो निश्चित रूप से उनके पारिश्रमिक से अधिक होती है ।

पचहत्तर को पार कर गए हैं । अब भी सुई के छेद में बिना चश्मे के ही धागा डाल लेते हैं । लंबा अँगरखा पहनते हैं । सिर पर सादी टोपी लगाते हैं । घर पर रहते हैं तो पैरों में लकड़ी की चट्टी पहनते हैं और कहीं जाना होता है तो पैरों में मोटे चमड़े की चप्पलें डाल लेते हैं ।

रज्जब चाचा ने जब से होश सँभाला, तब से ही वे बरामदे में बैठकर कपड़े सीते चले आ रहे हैं । युग बदल गया, लोग धरती पर से चंद्रलोक में चले गए पर रज्जब चाचा की मशीन में परिवर्तन नहीं हुआ । वही छोटी मशीन, जो उनके बचपन में थी, आज भी उनके पास है । रज्जब चाचा के समान वह भी बड़ी तेज चलती है । यदि कभी वह बिगड़ जाती है, तो रज्जब चाचा उसे अपने हाथों से ही ठीक कर लेते हैं । वे कहते हैं, ''इस मशीन से उन्हें बड़ा लगाव है, इसके साथ रहते हुए उन्होंने अपनी जिंदगी के उतार-चढ़ाव के बहुत से दिन देखे हैं ।''

रज्जब चाचा का घर अपने गाँव में, अपने मजहब का अकेला घर है । पूरा गाँव हिंदुओं का है पर रज्जब चाचा कभी ऐसा अनुभव नहीं करते कि वे गाँव में अकेले हैं । वे पूरे गाँव को अपना कुनबा और पूरे गाँव के धर्म को अपना मजहब मानते हैं । गाँव के छोटे-बड़े सभी लोग

परिचय

परिचय : व्यथित हृदय जी प्रसिद्ध कथाकार के रूप में जाने जाते हैं । आपकी कहानियाँ ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ अत्यंत रोचक भी हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'उपनिषदों की श्रेष्ठ कहानियाँ', 'जीवन रश्मियाँ', 'भारत छोड़ो', 'मनुष्य जो देवता बन गए' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत कहानी में कथाकार ने पारंपरिक हुनर, ग्रामीण सामाजिक ताना-बाना, आपसी प्रेम, सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता, भाईचारा आदि का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है । उच्च पदस्थ होकर भी अपने से बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर-सम्मान इस कहानी में दर्शनीय एवं अनुकरणीय है ।

मौलिक सृजन

'प्रकृति का नियम है -परिवर्तन' विषय पर अपने विचार लिखो ।

उनका बड़ा आदर करते हैं । गाँव में जब कभी किसी बात पर झगड़ा खड़ा होता है, रज्जब चाचा पहले बुलाए जाते हैं । रज्जब चाचा किसी भी मामले के संबंध में जो कुछ निर्णय कर देते हैं, फिर किसी में साहस नहीं होता कि वह उसे बदले, या न माने ।

अपने गाँव में ही नहीं, दूर-दूर के दूसरे गाँवों में भी रज्जब चाचा की बड़ी प्रतिष्ठा है । वे जहाँ कहीं भी पहुँच जाते हैं, लोग बड़े प्रेम से उनका आदर-सम्मान करते हैं । होली-दीवाली और दशहरे पर दूर-दूर के घरों से उनके पास पकवान पहुँचते हैं । वे स्वयं भी ईद, बकरीद आदि के अवसरों पर बहुत से लोगों के पास सेवइयाँ और मिठाइयाँ भेजा करते हैं ।

रज्जब चाचा के जवानी के दिन थे । गाँव के ठाकुर सूरजभान के लड़के का विवाह था । सूरजभान का लड़का माताप्रसाद गौरवर्ण का हँसमुख, सुशील और पढ़ा-लिखा युवक था । रज्जब चाचा बड़े चाव से विवाह का जोड़ा-जामा लेकर ठाकुर के आँगन में पहनाने के लिए उपस्थित हुए थे ।

रज्जब चाचा ने जब अपने हाथों से दूल्हे को जोड़ा-जामा पहनाकर उसे तैयार किया तो ठाकुर की बाँछें खिल गई । ठाकुर बाग-बाग होकर बोल उठे, ''रज्जब चाचा, तुमने तो कमाल कर दिया । तुम्हारे बनाए हुए जोड़े-जामे में तो मेरा बेटा ऐसा फब रहा है, मानो इंद्र हो ।''

रज्जब चाचा बोल उठे, ''तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर ठाकुर, खुदा की मेहर हुई तो तुम्हारा बेटा सचमुच इंद्र ही होगा ।''

युवक माताप्रसाद ने रज्जब चाचा के पैर छुए । रज्जब चाचा ने प्रसन्न होकर उसके सिर पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, ''खुदा तुम्हें खुश रखे बेटा । तुम सचमुच इंद्र बनकर अपने देश का नाम रोशन करो ।''

ठाकुर ने प्रसन्न होकर रज्जब चाचा को पूरे सौ रुपये का नोट न्योछावर में दिया ।

रज्जब चाचा प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हुए अपने घर चले गए ।

धीरे-धीरे दिन बीतते गए । माताप्रसाद ने वकालत पास की । वह शहर में वकालत करने लगा । कुछ दिनों के पश्चात वह शहर में ही बस गया । ठाकुरसाहब की मृत्यु हो गई ।

पर युग की रफ्तार ने उन पर ही नहीं, उनके काम पर भी प्रभाव अवश्य डाला है । काम तो अब भी उनके पास बहुत आता है, पर अब गाँवों में बहुत से ऐसे लोग पैदा हो गए हैं जो अब अपने कपड़े शहर में सिलवाने लगे हैं ।

रज्जब चाचा बदलते हुए जमाने की निंदा तो कभी नहीं करते पर वे जमाने के प्रभाव में आकर अपनेपन को छोड़ना भी पसंद नहीं करते । वे

संभाषणीय

किसी वृद्ध कलाकार के सम्मानार्थ उसके जीवन के रोचक अनुभवों को साक्षात्कार के रूप में प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

अपने आस-पास प्रचलित किसी विशेष लोककला की जानकारी प्राप्त करके लिखो ।

मुसलमान अवश्य हैं, पर वे अपने को किसी से अलग नहीं मानते । उनका कहना है, ''हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई तो धरती की देन है । खुदा तो केवल इनसान पैदा करता है ।''

अगहन-पौष के दिन थे । रज्जब चाचा की पोती का विवाह था । वे इस विवाह को बड़ी धूम-धाम से करना चाहते थे । उनका ख्याल था कि अब शायद वे किसी और के विवाह को न देख सकें । अतः वे इस विवाह में अपने मन की हर इच्छा को पूरा कर लेना चाहते थे ।

दोपहर का समय था । रज्जब चाचा अपनी पोती के लिए गहने और कपड़े खरीदने के लिए शहर जा रहे थे । यद्यपि उनके गाँव से होकर शहर तक बस जाती थी पर रज्जब चाचा पैदल ही जा रहे थे । वे पैदल के आदी थे । शहर केवल सात-आठ किमी के फासले पर था ।

रज्जब चाचा जब शहर के पास पहुँचे, तो एक विद्यालय के पास भीड़-भाड़ देखकर रुक गए । उन्होंने जब लोगों से पूछा कि यह भीड़-भाड़ क्यों है, तब लोगों ने उन्हें बताया कि शिक्षामंत्री जी आ रहे हैं, यह भीड़ उन्हीं के स्वागत के लिए एकत्र हुई है ।

पर रज्जब चाचा को शिक्षामंत्री से क्या लेना-देना ? वे उस भीड़-भाड़ की ओर देखते हुए शहर की ओर चल पड़े । जैसे ही वे शहर की ओर मुड़े, दनदनाती हुई एक कार आ पहुँची । रज्जब चाचा ने बड़ी कोशिश की कि वे शीघ्र ही कार के लिए रास्ता छोड़ दें पर शरीर बूढ़ा होने के कारण उन्हें कुछ क्षण तो लग ही गए और कार को रुक जाना पड़ा ।

पहरे पर नियुक्त सिपाही ने दौड़कर रज्जब चाचा को डाँट लगाई और उन्हें पकड़कर पटरी पर कर दिया ।

कार चली पर फिर रुक गई । सहसा कार का द्वार खुला और एक प्रौढ़ व्यक्ति बाहर निकले । वे कोई और नहीं, स्वयं मंत्री महोदय थे । वे किसी और को अवसर न देकर शीघ्र दौड़कर रज्जब चाचा के पास जा पहुँचे । उन्होंने कुछ कदम के फासले से ही पुकारते हुए कहा, ''रज्जब चाचा, रज्जब चाचा ।''

रज्जब चाचा जब तक कुछ कहें न कहें, मंत्री महोदय ने दौड़कर उनके चरण स्पर्श कर लिए । रज्जब चाचा ने बिना पहचाने हुए ही दोनों हाथों से उन्हें पकड़कर अपने सीने से लगा लिया । रज्जब चाचा ने जब उन्हें अपने सीने से लगाते हुए उनकी मुखाकृति को गौर से देखा, तो हठात उनके मुख से निकल पड़ा, ''माताप्रसाद ! तुम माताप्रसाद हो ।''

मंत्री महोदय बोल उठे, ''हाँ, रज्जब चाचा, मैं माताप्रसाद ही हूँ । आपने ही तो मुझे 'इंद्र' बनने का आशीर्वाद दिया था ।''

रज्जब चाचा की आँखें सजल हो गईं । उनकी आँखों से आनंद और

पठनीय

विविध विषयों पर आधारित विभिन्न साहित्यिक रचनाओं की पाठ्यसामग्री और साहित्यिक दृष्टि से आए विचारों को ध्यान में रखते हुए द्रुत वाचन करो ।

प्रसन्नता की बूँदें टपककर गिरने लगीं । उनकी आँखों के आँसू के उत्तर में मंत्री जी की आँखें सजल हो उठीं । उन्होंने अपने आँसुओं में बहुत से स्मृति चित्र देखे, फिर कुशल-क्षेम और हाल-चाल ! रज्जब चाचा ने उन्हें बताया कि उनकी पोती का विवाह दस दिसंबर को है ।

मंत्री महोदय ने अपनी डायरी में १० दिसंबर के दिन कुछ लिखकर रज्जब चाचा को बड़ी नम्रता से नमस्कार किया और फिर चले गए ।

रज्जब चाचा ने भी अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुए शहर का रास्ता पकड़ा ।

१० दिसंबर का दिन था । सूर्य डूब चुका था । रज्जब चाचा अपनी पोती के विवाह के कामकाज को लेकर बहुत व्यस्त थे । उनके पैरों में जैसे विद्युत की-सी गति पैदा हो गई थी ।

सहसा एक कार आकर रज्जब चाचा के दरवाजे पर रुकी । रज्जब चाचा ने आश्चर्यचकित होकर कार की ओर देखा । कार का द्वार खोलकर मंत्री माताप्रसाद उतर रहे थे ।

रज्जब चाचा ने दौड़कर माताप्रसाद को पकड़कर अपनी छाती से लगा लिया । उनके मुख से अपने-आप ही निकल पड़ा, ''अरे बेटा, तुमने क्यों कष्ट किया ।''

रज्जब चाचा की आँखें भर आईं । उन्हें बड़े आदर से अपने बरामदे में ले जाकर कुर्सी पर बिठाया । सारे गाँव में बिजली की तरह खबर फैल गई ।

मंत्री महोदय को उसी दिन, रात में राजधानी जाना था । अतः उन्होंने शीघ्र ही चाय-पानी करके रज्जब चाचा से छुट्टी ली । रज्जब चाचा और गाँव के लोग उन्हें कार तक पहुँचाने के लिए आए । मंत्री जी ने रज्जब चाचा के पैरों को छूकर कार में बैठते हुए कहा, ''चाचा, आप क्या करते हैं ?''

रज्जब चाचा ने उत्तर दिया, ''यहीं बरामदे में पुरानी मशीन से सिलाई करता हूँ ।''

कुछ दिनों के बाद लोगों ने बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि रज्जब चाचा के दो नई मशीने आ गईं । उन्होंने दो बेरोजगार युवकों को अपने पास काम पर रख लिया । बाद में गाँव वालों को पता चला कि वे मशीनें मंत्री महोदय ने भेजी थीं । अब रज्जब चाचा खूब खुश रहने लगें ।

—— ० ——

श्रवणीय

यातायात की समस्याएँ एवं उपायों पर किसी सड़क सुरक्षा अधिकारी का भाषण सुनो ।

शब्द वाटिका

नेग = शुभ अवसर पर दी जाने वाली भेंट

चट्टी = एड़ी की तरफ खुला हुआ जूता

फबना = जँचना

मेहर = दया, कृपा

मुहावरे

बाँछें खिल जाना = बहुत आनंदित होना

बाग-बाग होना = बहुत खुश होना

सीने से लगाना = प्यार से मिलना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

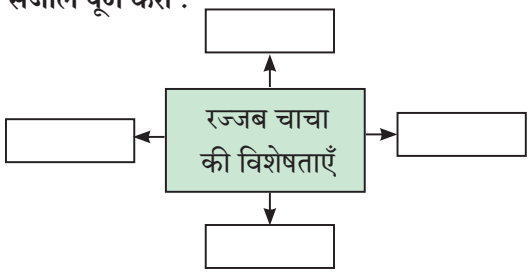

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
ठाकुर		मंत्री महोदय
रज्जब चाचा		सूरजभान
माताप्रसाद		जोड़ा-जामा
दूल्हा		दर्जी

(३) कारण लिखो :

१. रज्जब चाचा के पैरों में जैसे विद्युत की-सी गति पैदा हो गई थी -------

२. रज्जब चाचा का गाँव में अकेला होने का अनुभव न करना -------

(४) उत्तर लिखो

'रज्जब चाचा की केवल अपने गाँव में ही नहीं बल्कि दूसरे गाँवों में भी बड़ी प्रतिष्ठा है ।'

सदैव ध्यान में रखो मनुष्य को अपने कार्य से आदर प्राप्त होता है ।

भाषा बिंदु पाठों में आए काल सूचक दस वाक्य लिखकर उनका अन्य कालों में परिवर्तन करो ।

उपयोजित लेखन 'मेरे पिता जी' विषय पर निबंध लिखो ।

MFQQC7

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन दूरभाष से भ्रमणध्वनि तक के परिवर्तन सूचित करने वाले चित्रों का संकलन करो ।